स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक - 8, वर्ष 2022

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नीलबड़ मार्ग, भौरी, भोपाल 462030

:–संस्थान गान–:

''नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।''

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें हैं, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।
मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

:–संस्थान गीत–:

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।
तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।
ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जीउठे ....
एसपीए, भोपाल

अनुक्रमणिका

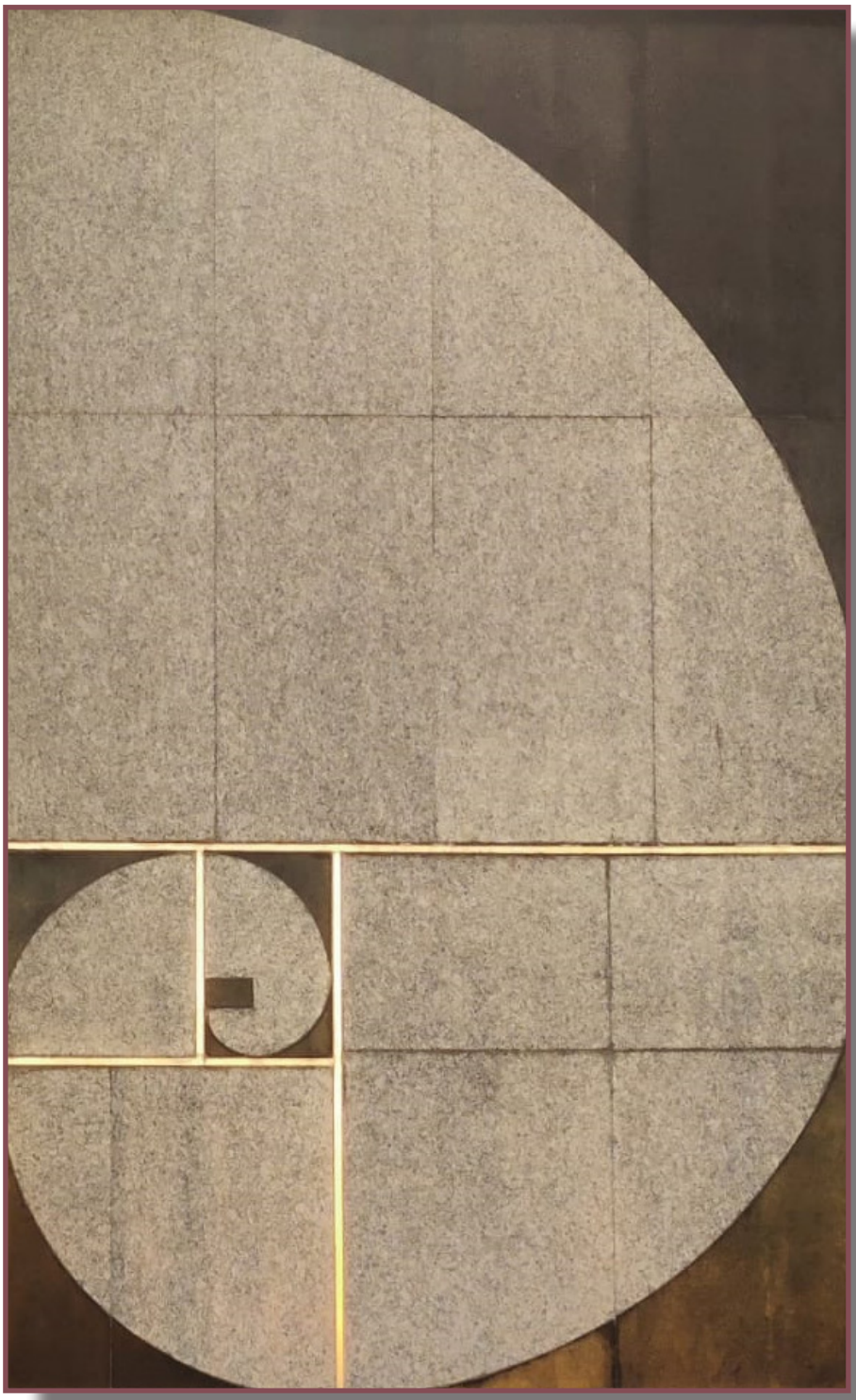

क्र.	विवरण	पृष्ठ
01	निदेशक संदेश	01
02	संपादकीय	02
03	शैक्षणिक गतिविधियाँ	03
04	प्रशासनिक गतिविधियाँ	05
05	खेल गतिविधियाँ	11
06	सांस्कृतिक गतिविधियाँ	12
07	छात्र गतिविधि एवं उपलब्धियाँ	13
08	अभिव्यक्तियाँ	15
09	विजयी प्रतिभागियों के लेख एवं कविताएं	29

"स्पन्दन"

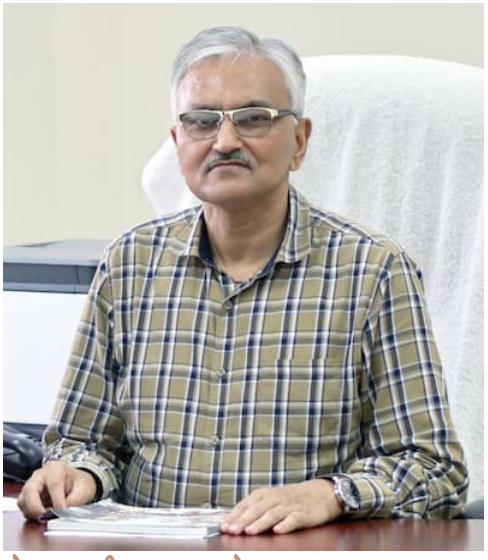

निदेषक की कलम से...

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2008 में स्थापित 'राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है' तथा उच्च शिक्षा के स्नातक, स्नातकोत्तर तथा डॉक्टोरेट कार्यक्रम में डिग्री प्रदान करता है।

संस्थान कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु सदैव अग्रसर रहा है। हिन्दी के प्रयोग को व्यवहारिक व प्रायोगिक बनाने हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में समय–समय पर राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान में कराये जाते हैं। संस्थान विगत वर्षों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स.) के सदस्यों में शामिल है तथा दिये गए निर्देशों एवं सुझावों का अनुपालन कर रहा है।

संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा प्रत्येक वर्ष बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इसी कड़ी में वर्ष 2022 में भी हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी पखवाड़े का प्रारंभ किया गया। इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन, व्यापक प्रचार–प्रसार, कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी की अभिरूचि बढ़ाने के लिये पृथक–पृथक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

संस्थान का राजभाषा विभाग समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करता है। इसके साथ ही कर्मचारियों को बाह्य कार्यशालाओं में भाग लेने हेतु नामित करता रहता है।

वर्ष 2014 से संस्थान वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''स्पन्दन'' का प्रकाशन कर रहा है। मैं उम्मीद करता हूं संस्थान हिन्दी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिन्दी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। पत्रिका के आठवे अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित
प्रो.चंद्र चारु त्रिपाठी

संपादकीय

यह वर्ष वैश्विक महामारी से उबरने का वर्ष है। सभी यत्नों से यह प्रयास जारी है और भारत वर्ष पूरे जोरों से इसमें से निकलने कि ओर अग्रसर है। इसका प्रतिबिंब हमें बढ़ते कारोबार और नए प्रकल्पों में देख सकते है। सभी विद्यार्थी अब अपने शिक्षा के स्थानों पर लौटने लगे है। विद्यार्थियों का पुनः आगमन संस्थान में नवीन ऊर्जा का संचार लाता है। युवा वर्ग अब ऑनलाइन मोड से निकल कर ऑफलाइन मोड में पुनः सामंजस्य बनाने की कोशिश कर रहा है। उनके लिए यह काफी कठिन कार्य है। इन रचनात्मक वर्षों में जब कोई सिर्फ संगणक के सामने ही बैठ कर नया ज्ञान हासिल करने का प्रयास करता है तो वह देने और लेने वालों दोनों के लिए ही कठिन होता है।

हमारा संस्थान एक राष्ट्रीय संस्थान होने के कारण इसमें देश की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता कि झलक साफ दिखाई देती है। विद्यार्थियों के पुनः आगमन से सांस्कृतिक और अन्य छात्र गतिवधियों के द्वारा संस्थान में ऊर्जा का संचार होता दिखता है जो छात्र गतिविधियों जैसे गणेश पूजा, रामलीला, गरबा, खेल आदि के माध्यम से परिलक्षित होता है। इसी बीच इस अंक के लेखों और कविताओं में मिश्रित भाव व्याप्त है। किसी के उद्‌गार विभिन्न धर्मों की बढ़ती दूरियों और उसके परिणामों को दर्शाते है तो कोई अपनी पहचान खोज रहा है। कोरोना और लॉक डाउन से परेशान व्यक्ति की अभिव्यक्ति भी इसमें शामिल है।

वैश्विक महामारी में हम मैं से कई लोगों ने अपनो को खोया, अपना व्यवसाय खोया है। कई जख्म अभी हरे है। पर संस्थान में व्याप्त युवा ऊर्जा यही सिखाती है कि कुछ भी स्थाई नहीं है और बदलाव के साथ परिस्थितियों से जूझते हुए आगे बढ़ना ही जीवन है।

संपादक मंडल

नवम् दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (एसपीए) भोपाल का नवम् दीक्षांत समारोह कोविड–19 के बाद पहली बार भौतिक रूप से आयोजित किया गया। अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स ने स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी छात्रों को डिग्री प्रदान करने के लिए दीक्षांत समारोह के प्रारंभ की घोषणा की। निदेशक, प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, आईएएस, मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार एवं पूर्व सचिव, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार और उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया। निदेशक ने विगत वर्ष में हुई एसपीए भोपाल की गतिविधियों और उपलब्धियों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा की एसपीए भोपाल वर्तमान में 40 से अधिक अनुसंधान और परामर्श परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है साथ ही संस्थान के कुछ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के संस्थानों के साथ समझौते (एमओयू) है जिनमे यूएन–हैबिटेट, जीआईजेड (जर्मनी), एनआईटीटी. टीआर भोपाल, एनआईडी भोपाल, आईआईएसईआर भोपाल, मध्य प्रदेश राज्य बांस मिशन, महानिदेशक अनुसंधान कक्ष मध्य प्रदेश पुलिस (**DRC & MPPA**), **MSME** प्रौद्योगिकी केंद्र भोपाल, अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन और नीति विश्लेषण संस्थान भोपाल, राजीव गांधी विश्वविद्यालय अरुणाचल प्रदेश, फ्लोरेंस विश्वविद्यालय, **NTNU** नॉर्वे, सीएसआईआर–एएमपीआरआई आदि शामिल है।

उन्होंने अपने छात्रों को संस्थान (एसपीए) की अमूल्य निधि बताते हुए कहा की छात्रों ने संस्थान को गौरवान्वित करने वाले विभिन्न पाठ्योत्तर आयोजनों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय

स्तर की प्रतियोगिताओं में न केवल भागीदारी की बल्कि उपलब्धियाँ प्राप्त कर संस्थान एवं देश का नाम गौरवान्वित किया। निदेशक ने इस अवसर पर उन्हें बधाई दी। निदेशक महोदय द्वारा विद्यार्थियों के भौगोलिक विविधता में उपस्थित समरसता को इंगित करते हुए बताया गया कि संस्थान में भारत के सभी भागों के विभिन्न त्यौहारों को उत्साह एवं परस्पर स्नेह के साथ मनाते हैं जो कि देश की विविधता में एकता का परिचायक है।

संबंधित विभागाध्यक्षों ने अपने संबंधित कार्यक्रमों के क्षेत्रों में डिग्री प्राप्तकर्ताओं को मुख्य अतिथि एवं निदेशक के सामने प्रस्तुत किया और मुख्य अतिथि, दुर्गा शंकर मिश्रा ने पीएचडी और स्नातकोत्तर छात्रों को डिग्री प्रदान की एवं 2 उत्कृष्टता पदक, 9 प्रवीणता स्वर्ण पदक, 1 प्रवीणता प्रमाणपत्र, 9 बेस्ट थीसिस अवार्ड, 2 थीसिस के लिए प्रंशसा का प्रमाण पत्र भी प्रदान किये। समारोह के मुख्य अतिथि श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, आईएएस, मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार ने सभी छात्रों को बधाई दी और दीक्षांत भाषण दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि एसपीए भोपाल को वेदों, समरांगणसूत्रधार और प्राचीन ग्रंथों में वर्णित भारत के पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक प्रणालियों का वास्तुकला शिक्षा में समावेश करना चाहिए। हालांकि, यह वास्तुकला, योजना और डिजाइन के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। जैसा कि यह भारत के मध्य में स्थित है और उज्जैनी, मालवा, महाकौशल, बुंदेलखंड, विदर्भ और रेवांचल के सांस्कृतिक क्षेत्रों से घिरा हुआ है, यह क्षेत्र गंगा के मैदान के दक्षिण और नर्मदा घाटी के उत्तर में स्थित होने के कारण विशेष महत्व का है। एसपीए भोपाल एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी बड़ी भूमिका निभा सकता है, यह अपने पाठ्यक्रमों को कई प्रविष्टि और निकास (**Multiple Entry and Exit**) के विकल्पों के साथ लचीला बनाकर स्थानीय भाषा में वास्तुकला और नियोजन के अनुसंधान और पाठ्यसंसाधनों को तैयार करने के लिये प्रयासरत है।

इस अवसर पर 256 (100 अंडर ग्रेजुएट, 152 पोस्ट ग्रेजुएट और 4 पीएचडी) उपाधियाँ (डिग्रियां) प्रदान की गईं, जिनमें 73 वास्तुकला में स्नातक, 27 योजना में स्नातक, 20 वास्तुकला में स्नातकोत्तर (संरक्षण), 21 वास्तुकला में स्नातकोत्तर (भुपरिद्रश्य), 19 वास्तुकला में स्नातकोत्तर (नगर अभिकल्पन), 21 योजना में स्नातकोत्तर (पर्यावरण योजना), 21 योजना में स्नातकोत्तर (परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स प्रबंधन), 34 योजना में स्नातकोत्तर (नगर एवं क्षेत्रीय योजना), 16 अभिकल्पन में स्नातकोत्तर, और 4 वाचास्पति (पीएचडी) डिग्री प्रदान की गयी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

स्थापना दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल ने दिनांक 3 नवम्बर 2022 को स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन माध्यम से विशेष व्याख्यान आयोजित किया। कार्यक्रम के विशेषज्ञ डॉ. बी. दयाकर राव, सीईओ, न्यूट्रीहब प्रिंसिंपल साइंटिस्ट, आईसीएआर, इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च ने मूविंग फ्रोम फूड टू न्यूट्रिशियन सिक्योरिटी एण्ड वेल बोइंगः ए केस ऑफ मिलेट्स वैल्यू चैन पर व्याख्यान दिया। उक्त कार्यक्रम में सुश्री रेवा सक्सेना छात्रा बी. आर्क को श्री गिरीराज किशोरी अवार्ड से सम्मानित किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान ने 31 अक्टूबर से 06 नवंबर, 2022 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। 31 **अक्टूबर, 2022** को संकाय सदस्यों और कर्मचारियों द्वारा सतर्कता शपथ ली गई। डॉ. विनीत कपूर, आईपीएस द्वारा, ऑनलाइन मोड के माध्यम से **'भ्रष्टाचार मुक्त भारत एक विकसित राष्ट्र'** पर विशेष व्याख्यान दिया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस

31 अक्टूबर, 2022 को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के परिसर में **71 वां** गणतंत्र दिवस समारोह**26 जनवरी 2022** को मनाया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। प्रो. श्रीधरन ने अपने उद्‌बोधन में वर्ष 2021 के दौरान हुई संस्थान की उपलब्धियों के बारे में बताया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

संस्थान ने **15 अगस्त 2022** को भारत का **76 वां स्वतंत्रता दिवस** मनाया। **कार्यक्रम में संस्थान के** संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक) ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। संस्थान के छात्रों ने इस अवसर पर गीत एवं नृत्य का प्रदर्शन किया। उत्सव में संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचारीगण व बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान परिसर में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। दिनांक 21 जून 2022 को योग शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विवेकानंद योग केंद्र, भोपाल के विशेषज्ञों द्वारा योग अभ्यास कराया गया।

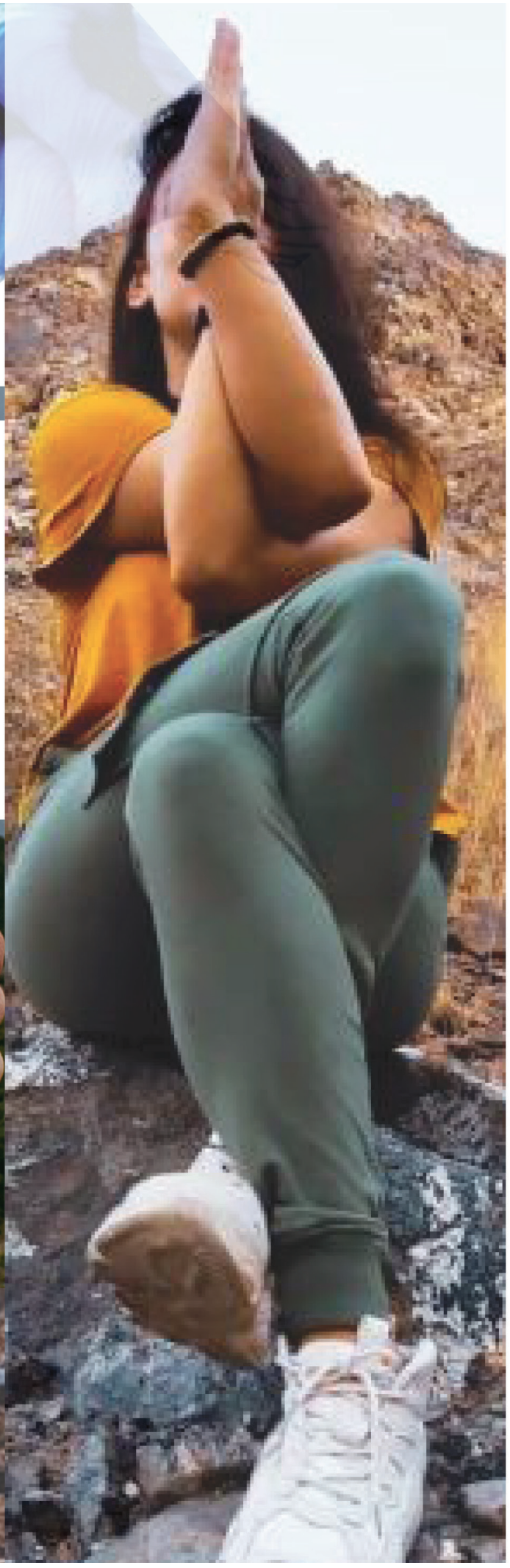

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान परिसर में 15 दिवसीय हिन्दी पखवाड़ा 14 से 30 सितम्बर 2022 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व छात्र–छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे ''निबंध लेखन, सुलेख लेखन, स्वरचित हिंदी कविता पाठ, हिंदाक्षरी, गज़ल एवं भजन प्रतियोगिता, स्पन्दन हिन्दी पत्रिका का मुख पृष्ठ का डिजाइन आयोजित की गई। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के सभी कर्मचारियों व छात्र छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. खेम सिंह डेहरिया जी कुलपति, अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक महोदय, कुलसचिव महोदय, मुख्य अतिथि महोदय एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी द्वारा सरस्वती पूजन कर किया गया। श्री धीरेन्द्र पधान, प्रभारी हिन्दी अधिकारी ने संस्थान में हो रही हिन्दी की प्रगति के बारे में बताया, संस्थान के निदेशक प्रो. चंद्र चारू त्रिपाठी जी द्वारा हिन्दी पखवाड़े की कार्यकारी समिति एवं प्रतिभागियों को बधाई दी। संस्थान में हिन्दी के कार्यों को बढ़ावा देने के लिए महोदय ने सभी विभाग प्रमुखों को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय डेहरिया जी, ने अपने उद्‌बोधन में शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी के प्रगति के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि तकनीकी क्षेत्र जैसे मेडिकल कॉलेजों की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया जा चुका है एवं शीघ्र ही यह पुस्तकें मेडिकल कॉलेजों के पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगी। सभी विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि महोदय, निदेशक महोदय एवं कुलसचिव महोदय ने स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये। कार्यक्रम का समापन हिन्दी सहायक सुनील कुमार जायसवाल ने सभी को धन्यवाद ज्ञापन कर आगामी वर्षों में इसी तरह से अन्य और प्रतियोगिताऐं कराने एवं हिन्दी के कार्यों का प्रयोग बढ़ाने के साथ किया।

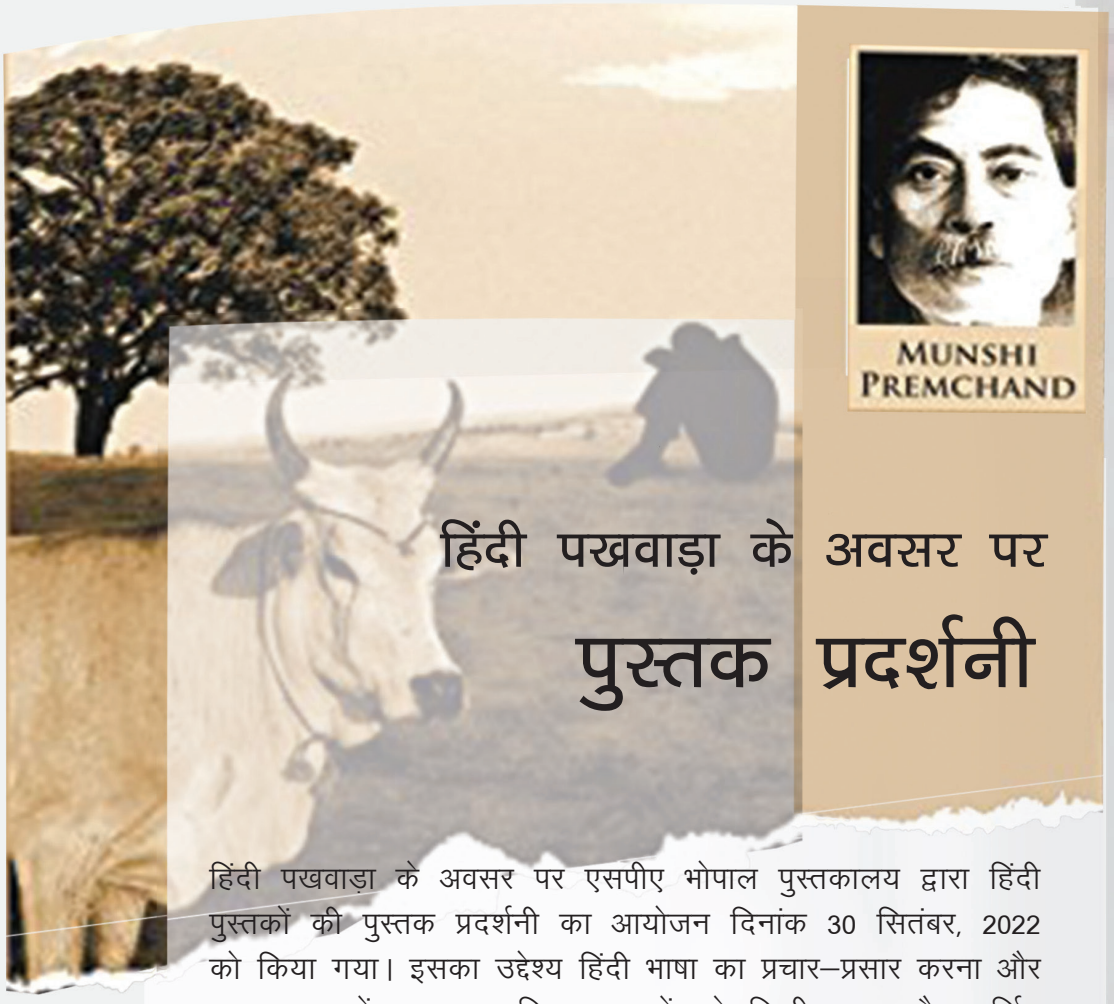

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर

पुस्तक प्रदर्शनी

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर एसपीए भोपाल पुस्तकालय द्वारा हिंदी पुस्तकों की पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 30 सितंबर, 2022 को किया गया। इसका उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार करना और पुस्तकालय में उपलब्ध प्रसिद्ध पुस्तकों को हिन्दी भाषा और अर्जित साहित्य में प्रदर्शित करना था।

प्रदर्शनी के बारे में सभी को बताने के लिए संस्थान के ''हिंदी पखवाड़ा समापन दिवस'' के उत्सव पर कॉन्फ्रेंस हॉल में एक डिस्प्ले बोर्ड लगाया गया था। इस प्रदर्शनी में प्रेमचंद, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, नरेंद्र कोहली, हरिवंश राय बच्चन, अमृता प्रीतम, राहत इंदौरी, जय शंकर प्रसाद, राम चंद्र शुक्ला और कई अन्य लेखकों की 40 से अधिक पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया।

प्रतिक्रिया सकारात्मक थी क्योंकि संकाय सहित कई इच्छुक युवा पाठकों ने कुछ संस्करणों में रुचि दिखाई।

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस 2022 के अवसर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांक 12 अगस्त 2022 को **डo. एस.आर. रंगनाथन जी** की जयंती के अवसर पर संस्थान परिसर में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर एसपीए भोपाल के पुस्तकालय ने **'हिडन ट्रेजर (आर्किटेक्चर पर किताबें)'** विषय पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह एसपीए भोपाल के सभी हित धारकों के लिए खुला था, प्रतिक्रिया सकारात्मक थी और उपयोगकर्ताओं ने प्रदर्शित पुस्तकों में रुचि दिखाई।

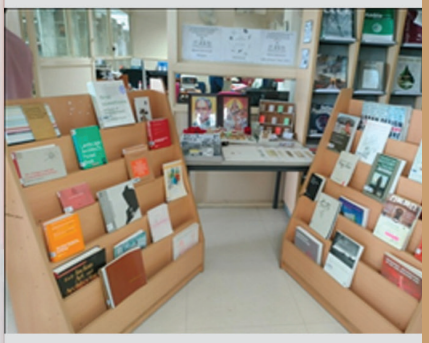

हिन्दी कार्यशाला – सामान्य जीवन में वास्तुकला का महत्व

संस्थान में 28 दिसम्बर 2022 को हिन्दी कार्यशाला संस्थान के कर्मचारियों के लिये आयोजित की गई, कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान देने हेतु प्रो. संजीव सिंह, प्राध्यापक, वास्तुकला विभाग को आमंत्रित किया गया था। प्रो. संजीव सिंह ने अपने व्याख्यान में वास्तुकला का अर्थ, घरों के निर्माण में वास्तुकला का महत्व, दिशाओं के प्रभाव एवं महत्व के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को बताया।

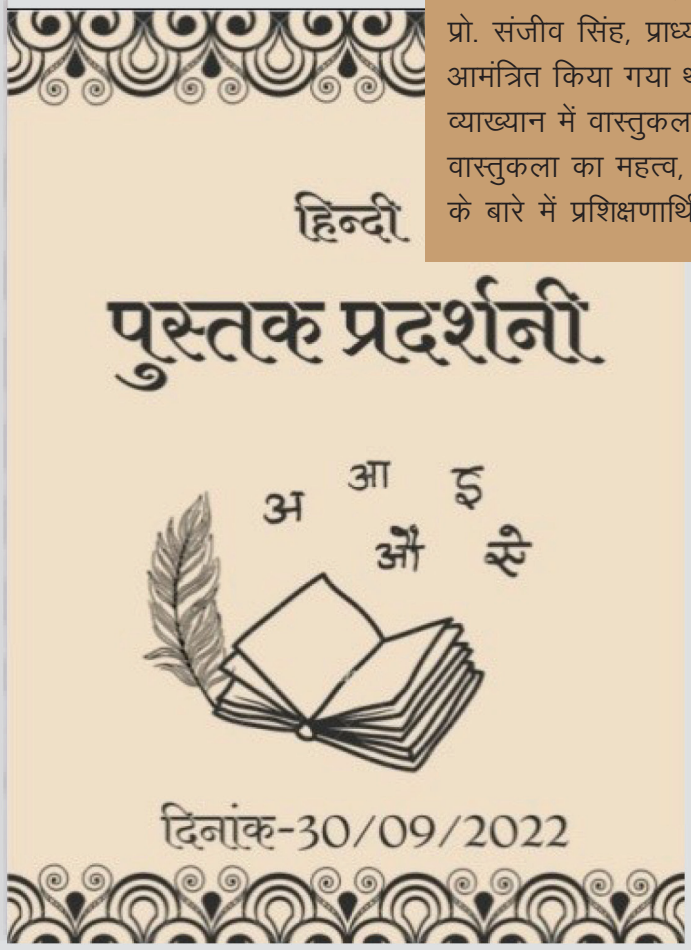

“खेल को जीतना ही नहीं ,
जीतने की चाह रखना ही सबकुछ है ।”

खेल गतिविधियाँ

बास्केटबॉल का मैच
दिनांक 6 मई 2022, को संस्थान परिसर में बास्केटबॉल मैच टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।

मिनी क्रिकेट टूर्नामेंट
दिनांक 14 एवं 15 मई 2022, को संस्थान परिसर में मिनी क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।

कबड्डी मैच
दिनांक 16 मई 2022, को संस्थान परिसर में मिनी क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।

वॉलीबाल मैच
दिनांक 22 एवं 23 मई 2022, को संस्थान परिसर में वॉलीबाल मैच टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक गतिविधि

विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों से आने वाले छात्रों ने हिंदू गुड़ी पड़वा, विशु (मलयालम नव वर्ष), पुथंडु (तमिल नव वर्ष), बोहागबिहू (असमिया नव वर्ष), पाना संक्रांति (ओडिया नव वर्ष), पोइला बैशाख मनाकर हमारे देश की विविधता में एकता प्रदर्शित की है। बंगाली नव वर्ष, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, ओणम, नवरात्रि, रामलीला और बथुकम्मा गहन स्नेह और उल्लास के साथ संस्थान में छात्रों व स्टॉफ ने मनाया।

छात्र गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

☐ **अंश आनंद मिश्रा (2020 बी.आर्क 31)**
जामीया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, द्वारा आयोजित अंतर –महाविद्यालय प्रतियोगिता में लेक्सिकन 2022, वार्षिक साहित्य महोत्सव, चित्र कहानी प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया (दिनांक 14–15 मार्च 2022)

☐ **ध्रुव भाटिया (2019 बी.आर्क 14)**
कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका में बर्कले पुरस्कार 2022 से सम्मानित (अक्टूबर 2021 से फरवरी 2022)
120 घंटे, ओस्लो स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, नॉर्वे – विशेष उपलब्धि (7–11 मार्च 2022)

☐ **आयुषी श्रीवास्तव (2019 बी. आर्क. 064)**
120 घंटे, ओस्लो स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, नॉर्वे – विशेष उपलब्धि (7–11 मार्च 2022)

☐ **तान्या कंसल (2020 एमएलए 001)**
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुति – सतत् वास्तुकला में ''शहरी आवासीय क्षेत्रों में बच्चों के लिए आउटडोर प्ले स्पेस के रचनात्मक अवसरों की जांच–बरेली, भारत'' शीर्षक से पेपर प्रस्तुत किया गया – मानवीय शहर, एएमपीएस द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन दयानंद सागर विश्वविद्यालय, बैंगलोर (मार्च 2022)

☐ **मृत्युंजय पाठक (2019 बी.आर्क 023)**
द केफ इंटीरियर्स– इंटीरियर डिजाइन प्रतियोगिता, आर्किडियास द्वारा आयोजित – विशेष उपलब्धि (दिनांक 21 अक्टूबर 2021–5 फरवरी 2022)
आर्किटेक्चर रेंडर अवार्ड 2022, आर्कजिग द्वारा आयोजित– द्वितीय पुरस्कार (दिनांक 1 दिसंबर 2021–20 मार्च 2022)

☐ **प्रसिद्ध कुमार** (2019 बी.आर्क. 001)

द केफ इंटीरियर्स– इंटीरियर डिजाइन प्रतियोगिता, आर्किडियास.कॉम द्वारा आयोजित – दूसरा पुरस्कार (दिनांक 21 अक्टूबर 2021–5 फरवरी 2022)
आर्किटेक्चर रेंडर अवार्ड 2022, आर्कजिग द्वारा आयोजित– दूसरा पुरस्कार (दिनांक 1 दिसंबर 2021–20 मार्च 2022)

☐ **स्मृति शर्मा** (2019 बी.आर्क 043)

आर्कडाइस द्वारा आयोजित कैफे इंटीरियर डिजाइन प्रतियोगिता –विशेष उपलब्धि (दिनांक 21 अक्टूबर 2021–5 फरवरी 2022)

☐ **रेवा सक्सेना** (2017 बी.आर्क 002)

वास्तुकला डिजाइन उत्कृष्टता 2021 के लिए वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय बर्कले स्नातक पुरस्कार। यूसी बर्कले द्वारा जारी– विजेता– प्रथम स्थान
ब्लीडिंग पिंक, बुक ऑफ पोएम्स। 22 मार्च को किंडल पर प्रकाशित – कविताओं की प्रकाशित पुस्तक में परिचयात्मक निबंध और प्रस्तावना में योगदान दिया। (दिसंबर 21– मार्च 2022)

☐ **ऐश्वर्या कुलकर्णी** (2020 एमयूडी 016)

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान – संगठनः वास्तुकला परिषद विषयः सीओए वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता शहर में घरः भुज, कच्छ का पुनर्निर्माण (दिनांक 29 अगस्त 2021)

रचनात्मक भविष्य 2022 का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, बिंदुओं को जोड़नाः पाटनगढ़, मध्य प्रदेश में गोंड कला के संरक्षण के लिए आत्मनिर्भर शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र (दिनांक 4 मार्च 2022)
सम्मेलन की कार्यवाही में प्रकाशित और प्रस्तुत शोध पत्र – संगठनः शहरी ग्राम चैरिटेबल ट्रस्ट, विषयः शहरी गांवों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संगोष्ठी, तेजी से शहरीकरण की कमी, प्रतियोगिताएं और रेज्यीलेंटः चंद्रावल गांव की महिलाएं, नई दिल्ली (4 मार्च 2022)

कविताएँ

मैं एक बेबस लाश हूँ जज़्बात नहीं होते मुर्दों के
पर क्या कहूँ बहुत हताश हूँ
जब जिन्दा थी, तो जीने की बहुत आस थी
हस्ते–खेलते परीजनों के पास थी
बहुत गुमान था अपने इंसान होने का
मगर अब पता चला हैवान होने का ।

जब सांसों की मोहताज थी जिन्दगी
शहर ने पराया कर दिया
श्मशान ने भी मुंह मोड़ लिया
ना जगह थी ना जलाने को लकड़ी
अपने भी मायूस थे क्या करते
गंगा किनारे ले आये डरते–डरते
केसरी रंगी चादर में कफना दिया
रात के अंधेरे में दफना दिया ।

मैं अकेली नहीं थी, हजारों थी लाशें
आपस में गुफ्तगू करने लगी लाशें
तब गंगा माँ ने सुना और सैलाब से कब्र धो दी
और केसरी लाशें मुर्दा शहर में तबदील हो गई
गिद्ध, कुत्तों की महफिलें लगने लगी।

यह खबर उनके कान में भी पड़ी
कहते हैं हमे नहीं मालूम
कैसे–कब–कहाँ–किसकी मौत हुई
वहां का मुर्दा गंगा यहां बहा ले आयी
लाश से पूछो की दे अपनी गवाही
नहीं बोलती तो चादर उठा दो
गहरी खाई खोद नीचे दबा दो
मौत का आंकड़ा है दोस्त
बढ़ेगा तो चुनाव में फरक पड़ेगा ।

तो हम बेबस लाशों की यह है दास्तां
परिवार उजड़ गए गांव हुए वीरान
पर मौत से बड़ा है सियासत का नाच
मरते हैं मर जाने दीजिये
मेरी कुर्सी को आये ना कोई आँच ।

मोहित सोनी, सहायक प्राध्यापक

संदीप घंटाला, *छात्र*

अभिव्यक्तियाँ

जब गॉव में शहर आया

जब गॉव में शहर आया,
तब एक नये विकास का सपना लाया।
बिजली, पानी, सड़कें, स्कूल,
और अस्पताल आएगा ये बताया,
जब गाँव में शहर आया।।
तब कल–कल बहती नदियों ने
पथरीली सडकों को गोद ले लिया।
और हरे–भरे खेतों ने ऊँची इमारतों
को सँजो लिया।
तब घने जंगलों ने बंजरपन
को अपना लिया,
और उपजाऊ जमीनों ने सूखेपन
को सराह लिया।

जब गाँव में शहर आया ।।।।
तब आमों के बागीचे कंक्रीट
के जंगलों में लुप्त हो गए,
और चिड़ियों के घरोंदे ट्रैफिक
के शोर में विलीन हो गए।
तब खेल के मैदानों ने पार्कों
को जन्म दिया,
और चौपालों ने लाल पत्थरों को ग्रहण किया।

जब गाँव में शहर आया ।।।।
तब झुग्गी–झोपड़ियों ने इंटों
के मकानों को तकदीर बनाया,
और खुले बाजारों एवं मेलों
ने एसी लगे मॉलों का रूप लिया ।
तब डेहरियों की गप शप बालकनियों
में बंद हो गयी,
और चहकते हुए बरामदे–आंगन
को ड्राइंग रूम बनाया
जब गाँव में शहर आया ।।।।

तब नौकरियों के लालच ने खेती–बाड़ी को बन्द कराया
और गरीब किसानों ने कर्जे में मौत को गले लगाया ।
तब जमींदारी बूढ़ी होकर चली गयी,
और बिल्डरों ने गाँवों में अपनी किस्मत को आजमाया।

जब गाँव में शहर आया।।।।
तब पहाड़ों ने गुर्राया मुझे मत काटो,
तुम्हारे लिए जंगल बनाएगा कौन?
बादलों ने घनघनाया मुझे मत दूषित करो,
तुम्हारे लिए वर्षा लाएगा कौन?
जंगलों ने बड़बड़ाया मुझे मत ख़तम करो,
तुम्हारे जानवरों

को बसाएगा कौन?
धरा ने थरथराया मुझे बंजर मत करो,
तुमको अपने में समायेगा कौन?

जब गाँव में शहर आया ।।।।
विकास अँधा हो गया,
और तकनीकी ने साथ लिया है मौन,
गांव के गांव ख़त्म हो गए,
और शहरों को बढ़ गया है प्रकोप।
कंपकपाते गांव ने बोला,
बस करो ये तकनीकी विकास और बंद करो ये
विध्वन्स, बाढ़, प्रदूषण, भूस्खलन,
सूखा हैं बिन बुलाये शैतान,
अब हमें इनसे बचाएगा कौन?।।
अब हमे इनसे बचाएगा कौन?
जब गाँव में शहर आया।।।।
जब गाँव में शहर आया।।।।

अनुपमा भारती
सहायक प्राध्यापक

कविताएँ

लॉक डाउन

लॉक डाउन की समय खाली बैठे–बैठे,
जीवन के रोचक किस्से को
इंस्टा पर सबसे कहते–कहते,
आशाओं के छोटे से गुब्बारे में ही
सीमित रहते–रहते,
मन में एक सकपकाहट,
एक हीनता की भावना ने दस्तक दी।
हालांकि यह पहली बार नहीं था,
कि यह टिमटिमाता सातारा
किसी व्याघ्र की भांति मेरी स्मृति पट पर
चित्त और चेतना के साथ
आंख मिचौली खेल रहा हो।
पर इस बार एक बात अनोखी थी,
मेरे पास समय एवं सैयम
दोनों का ही आभाव नहीं था
मोबाइल व मनोरंजन कि
अंधकारमय आदतों की
अदृश्य जंजीरों को छोड़,
चिंतन के महासागर में एक
जिज्ञासु गोताखोर, ने डुबकी लगाई थी।
मुर्गे तो हर दिन युंही घबराते थे,
सूरज की किरणे पहली बार
धरा से टकराईं थीं।।

पियूष बिलगईयाँ , छात्र

दिल्ली और लाहौर

अभी दिल्ली में कोई मसहला हुआ,
आग भड़की,
मगर लाहौर शांत था,
मानो जैसे कि कुछ हुआ ही ना हो,
मुझे हैरानी हुई,
100 बरस पहले अगर दिल्ली जलता,
तो लपटें लाहौर छू लेती,
वो आग आदमी के जहन को जलाती,
दोनों तरफ एक–सी आवाजें उठती,
उन में फर्क करना मुश्किल होता,
उनमें से एक आवाज भगत की होती,
एक बिस्मिल की,
एक अशफाक उल्लाह की,

कलम

जी करता है कलम उठाऊ और
दिल की स्याही से कागज के हर एक कतरे को तुमसे सजा दूं
नज्मों और गजलों में तुम्हारे नाम का
जिक्र कर इस चाहत को एक मशाल बना दूं।
पर अपनी मोहब्बत को किसी किताब के
बीच कहीं नहीं रखना चाहता मैं,
तुम्हे पाने से पहले ही खोने की गलती नहीं करना चाहता मैं।
पहली दफा जुदा हो रहा हूं तुमसे,
करीब आ रहा हूँ तुम्हारे पहली दफा,
जी करता है कलाई थाम फरियाद कर
बाहों में भर के रोक लूँ तुम्हें।
पर वक्त से पहले तुम पे हक जताने की जुर्रत नहीं करना
चाहता मैं,तुम्हे पाने से पहले ही खो देने की गलती नहीं करना
चहता मैं।एक मीठा सा दर्द उठा है मेरे अंदर
और ये दर्द इस रेलगाड़ी की तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है
मानो जैसे किसी पत्थर में
बेपनाह जान झोंक दी गई हो मानो जैसे
कोई बादल बरस पड़ा हो सूखी जमीन पे
वक्त बेहद बेवफा है और न जाने ये
इंतेजार कितना लंबा होने वाला है, जी करता है खिड़की ऊपर
कर तुम्हें एक आखिरी दफा आँख भर के देख लूं।
पर तुम्हारी इजाजत के बिना तुम्हें नज़रों से भी नहीं छूना
चाहता मैं, तुम्हें पाने से पहले ही खो देने की गलती
नहीं करना चाहत मैं।

मृत्युंजय, छात्र

हिन्दी की स्थिति

आज भारत की क्या स्थिति हो गई है,
हिन्दी तो केवल अढ़ाई शब्दों में ही
खो गई है।
लोग अंग्रेजी बोलने में महसूस करते हैं सम्मान,
जैसे हिन्दी में बात करेंगे तो हो जाएंगे
दो टके के इंसान।
नमस्ते को छोड़ लोग कहते है हैलो हाय,
हाय! जैसे उन्हें हो गया हो
कोई दुःख असहाय।
माँ को तो कहते हैं मम्मी, मम्मी,
ममी तो जिंदा होकर भी जिंदा नहीं।
पिताजी को तो कर दिया है पूरी तरह से डैड,
पराठों को छोड़ लोग खा रहे है जैम और ब्रैड।

पारम्परिक नृत्य –संगीत को तो
चला गया जमाना,
लोग तो पसंद करते हैं,
डिस्को जाना और अंग्रेजी गाना गाना।
बच्चे सबसे पहले सीखते हैं
ए फॉर एप्पल जेड फॉर जीरो,
और समझते हैं अपने आपको हीरो।

हिन्दी के माथे पर बिंदी बन गई उसका कलंक,
एक दो तो याद नहीं,
पर याद है सभी को अंग्रेजी के अंक।
आने वाली पीढ़ी, जब हिन्दी से नजरें चुराएगी,
बेतुकी बढ़ेगी हिन्दी कहकर इसकी हँसी उड़ाएगी,
तो हिन्दी किसकी शरण में जाएगी?

''हिन्दी है हमारी मातृभाषा,
जीवित रखें इसका स्वरूप,
नहीं तो एक दिन हम पहचान नहीं,
पाएंगे भारत का रूप।।''

तनु कश्यप, छात्रा

मगर कोई फर्क नहीं होता,
दिल्ली और लाहौर जलते हुए भी इठलाते,
पहले दिल्ली से लाहौर का सफर
3 दिन का था,
मगर ये शहर बहुत पास थे,
अब ये सफर 3 घंटे का है,
मगर सरहदें पूरा होने नहीं देती,
क्या आजादी के उन नारों में
हमने सरहदें मांगी थी,
दिल्ली लाहौर से बहुत दूर हो चुका है,
अब ये एक दूसरे के
मसहलों में नहीं पड़ते।

शुभम चौधरी, छात्र

सायशा, *छात्रा*

कविताएँ

सहस्त्र क्रान्ति

धधक–धधक, भड़क रही,
ये अग्न मेरे रक्त की,
जलज सहज पनप रहे हैं,
मेरी अश्रु धार से,
गगन भी कोटि–कोटि धन्य,
हो रहा हैं त्याग से,
ये पग भी यूँ डगर–डगर भटक,
रहे है चिन्त मन,
अवश्य इस ही आस मे, सह
कि लक्ष्य ही वशिष्ठ है,
मगर सहस क्रान्ति ही,
कष्ट रिक्त वक्त हैं।

शुभम चौधरी, छात्र

बेफिक्र

बेफिक्र हो तुम बेफिक्र ही रहना,
इस नए से पड़ाव में...खुद को मत खोना।
तुम्हारी ऊर्जात्मक मुस्कान खूबसूरती हैं तुम्हारी,
बस अपने अंदर की खूबसूरती कभी न खोना।
कभी–कभी परिस्थितियाँ
कमजोर कर रोकना चाहेंगी तुम्हें,
बस इरादे नेक कर... औरों के पंख बनना।
तुम्हारी बेसब्री ही तुम्हारी जिद और ताकत है,
इसे बस कुछ बातों या
नकारात्मकता से ना टटोलना।
बेफिक्र हो तुम बेफिक्र ही रहना।

नंदिनी मेहता, छात्र

हवा

हवा में कितनी ठंडक है,
ये छू कर यूं गुजर रही है।
इस तरह महसूस होता है,
मानो मुझसे ये मिल रही है।
पानी की चंद बूंदे है,
और टिप–टिप हो रही है।
एक खुशबू है मौसम में,
जैसे ये मिट्टी बह रही है।
शाखों की टहनियां, पत्ते और
फिजायें ढल रही हैं।
चले हैं मुसाफिर घर को,
ये मंजिलें कह रही हैं।

पूजा निनावे
सहायक प्राध्यापक

लफ्जों का प्यार

मेरा अपना कुछ भी नही,
ये लफ्ज सारे तुम्हारे है,
तुम ही से ये आते हैं,
और मुझसे होते हुए,
तुम तक ही पहुंच जाते है।
मेरा अपना कुछ भी नहीं,
पंक्तियों की लय ये सारी तुम्हारी है
ये भाषा तुम्हारी, बातें तुम्हारी,
इन्हे लिखते वक्त ख्याल भीण्ण्ण
तो तुम्हारा ही है।
मेरा अपना कुछ भी नही,
इन लफ्जों को पड़ने का निर्णय...
सारा तुम्हारा है।
तुम ही आगाज़ हो,
और अंत भी हो तुम ही,
इनका अस्तित्व भी तो बस
तुम से ही है ना।
मेरा अपना कुछ भी नही,
ये एहसास सारा तुम्हारा है।
और में तो बस एक जरिया हूं,
इन लफ्जों का, जिनको
शायद तुम से प्यार है।

पियूष बिलगईयाँ , छात्र

उर्जसी बोस, छात्रा

शाम्भवी, *छात्रा*

कृपा थॉमस, छात्रा

कृपा थॉमस, छात्रा

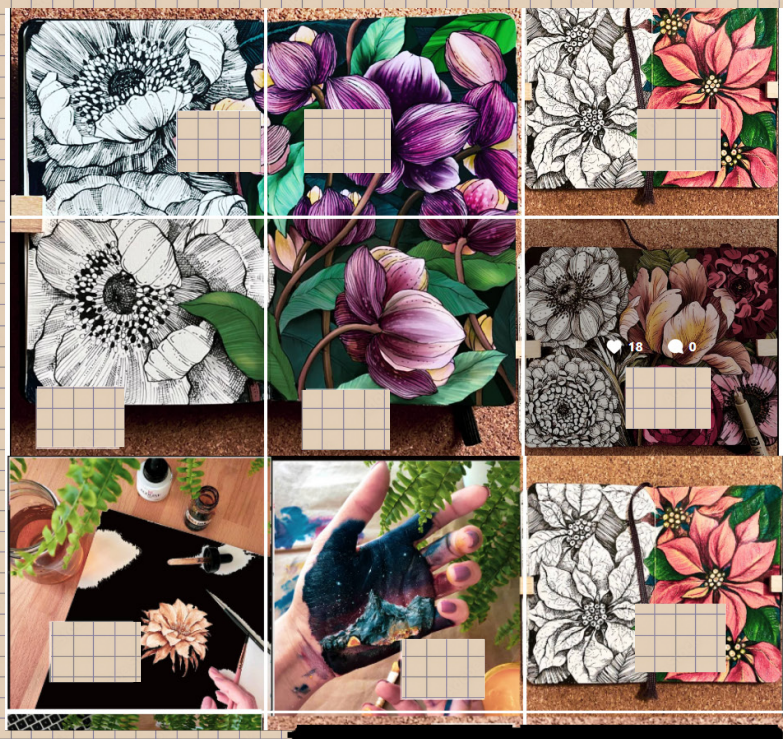

कला कौशल

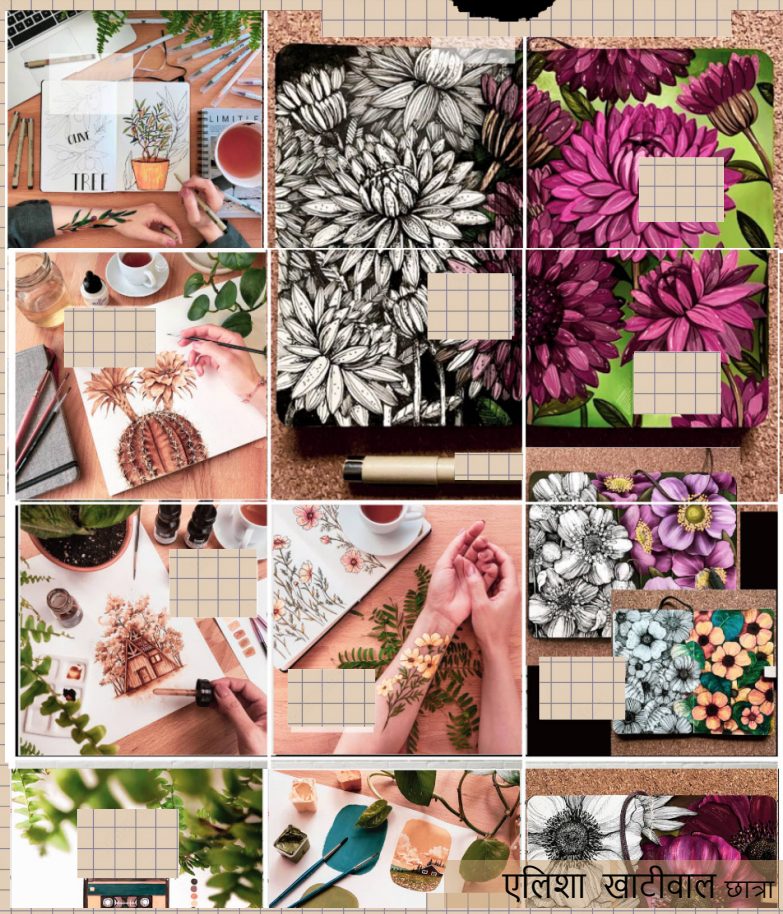

एलिशा खाटीवाल छात्रा

उर्जसी बोस, छात्रा

शाम्भवी, *छात्रा*

शाम्भवी, *छात्रा*

कृपा थॉमस, छात्रा

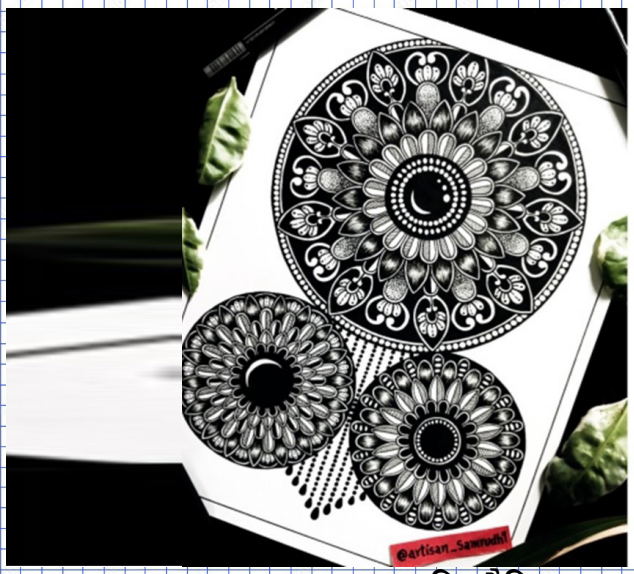

स्मृद्धि कौषिक, छात्र

श्रीजा सेन्थीनाथन, छात्रा

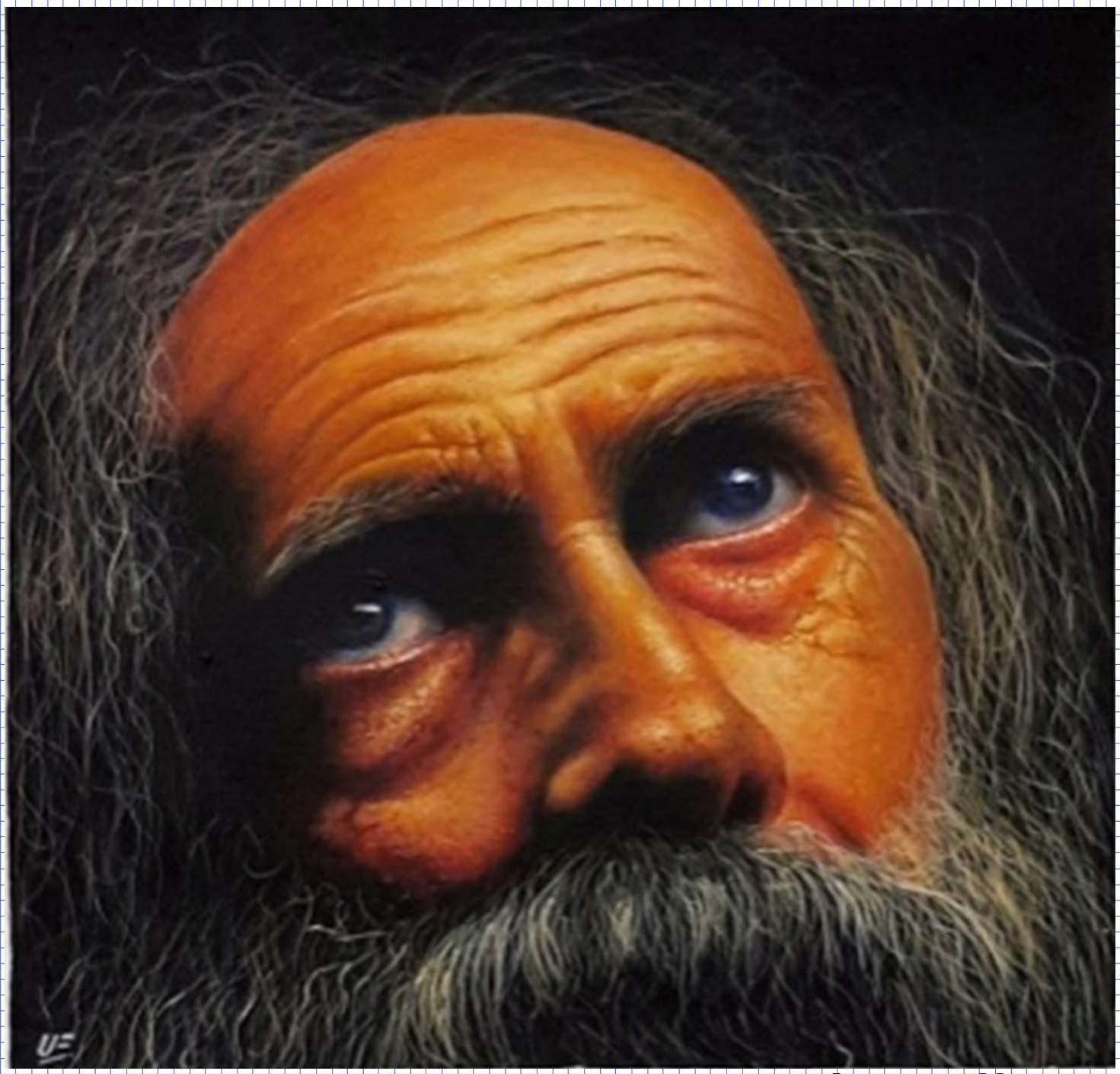

उद्देसा गुलाबराव फोले, छात्र

मयंक कुजेरकर, छात्र

मोहित सोनी, सहायक प्राध्यापक

श्रीजा सेन्थीनाथन, छात्रा

मोहित सोनी, सहायक प्राध्यापक

उर्जसी बोस, छात्रा

उपनिषद

भारतीय ज्ञान के भंडार मैं प्राचीन उपलब्ध ग्रंथो मे वेद सबसे प्रथम ग्रन्थ माने जाते हैं । पूर्व श्रुतियो को श्री वेदव्यास जी ने चार भागों में विभाजित किया जो चार वेदों के नाम से जाने जाते हैं। हर वेद में चार प्रकार कि संहिता है। ब्रह्मण, अरण्यक, उपनिषद और मंत्र संहिता। इनमे से उपनिषद सबसे छोटा संकलन है जो कि ज्ञान कांड के अंतर्गत आता है। उपनिषद के शाब्दिक अर्थ है। पास बैठकर गुरु से ज्ञान प्राप्त करना या अन्धकार दूर करना। आदि शंकराचार्य ने इसे ब्रह्म विद्या कहा है। यह अविद्या को नष्ट कर मुक्ति के इच्छुक प्राणियों को ब्रह्म कि ओर ले जाती है। इस ज्ञान के भंडार को पांच प्रकार से विभाजित किया जा सकता है।

आदि दैविक- जो प्राणिमात्र का साफ्टवेयर है

आदिभौतिक- जो किसी जीव या वास्तु कि भौतिक स्थिति के बारे में बताते है

वैज्ञानिक- किसी के अस्तित्व का वैज्ञानिक कारण प्रस्तुत करता है

आध्यात्मिक- ब्रह्म और परब्रह्म के एकरूप मे निहित होने कि भावना है

पारमार्थिक- इस भू लोक में जीवन यापन के लिए व्यावहारिक ज्ञान

ईश-केन -कठ- प्रश्न -मुंड - मांडूक्य - तित्तरि: /

ऐतरेय च छांदोग्य बृहदारण्यक तथा //

इन उपनिषदों को दो लोगों के संवाद के रूप मैं लिखा गया है। उदाहरणतः इस उपनिषद में यम और नचिकेता, केन उपनिषद में गुरु और शिष्य, प्रश्न उपनिषद में पिप्पलाद ऋषि और सुकेश व छह अन्य ऋषि, मूंदक उपनिषद में अथर्व ऋषि और अंडी व सत्यवः ऋषियों के बीच, छांदोग्य में जानश्रुति, सत्यकाम जबाला, शौनक, अष्टवक्र और उद्दालक ऋषि आदि। इन सभी में गुरु से शिष्य को श्रुति के रूप में ज्ञानदान दिया गया है। जैसा कि इसका नाम है – गुरु के समीप बैठकर गुरु से ज्ञान प्राप्त करना।

उपनिषदों में कई महावाक्य हैं। इनके द्वारा ब्रह्म और परब्रम्ह का पूर्ण से पूर्ण और शून्य से शून्य का विभाजन विदित है। इन सभी उपनिषदों मैं परब्रम्ह परमेश्वर के निर्गुण और सगुन स्वरुप को नाना प्रकार से समझाया गया है। वेदों का अंतिम भाग होने के कारण इसे इनको वेदांत के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्नोपनिषद अथर्ववेद के पिप्पलाद शाखीय ब्रह्मण भाग के अंतर्गत है। इस उपनिषद मे पिप्पलाद ऋषि ने छह ऋषियों – सुकेश, भारद्वाज, शैव्य, सत्यकाम, गार्ग्य, कौशल्य आश्वलायन, विदर्भी भार्गव तथा कादम्बि कात्यायन द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिये और शंकाओ का समाधान किया।

ऋषि कबन्धी पहले प्रश्न में पूछते हैं कि इस सम्पूर्ण चराचर कि उत्पत्ति का सुनिश्चित परम कारण क्या है? इस पर ऋषि पिप्पलाद ने वेदों में परम पिता परमेश्वर को ही इसका कारण बताया है। सृष्टि कि उत्पत्ति के लिए उन्होंने तप से रयिक (स्त्रीलिंग) और प्राण (पुल्लिंग) कि रचना की। इस प्रकार स्त्री और पुरुष सिद्धांत ही इस चराचर कि उत्पत्ति का कारण है। इसमें जीवन शक्ति अर्थात सूर्य को प्राण कहा गया है और जिस जगह पर इस जीव कि उत्पत्ति होती है उस स्थूल रूप को पृथ्वी अर्थात "रयि" कहा गया है। इसके विश्लेषण में अनेक उदहारण दिए जा सकते हैं। इस सृष्टि में परस्पर दो विरोधी पर पूरक शब्दों, स्थितियों, वास्तु आदि को प्राण और रयि में विभाजित किया जा सकता है। रयि यह भोग्य रूप है और प्राण यह शक्ति रूप है।

इस प्रकार आदित्य, अमूर्त, यज्ञ, उत्तरायण, शुक्लपक्ष, ज्ञान का मार्ग आदि को प्राण और चन्द्रमा, मूर्त, शक्ति, दक्षिणायन, कृष्णपक्ष, कर्मा का मार्ग आदि को रयि कहा गया है। इस प्रश्न के उत्तर के अंतिम श्लोक में कहा गया है कि जो सदाचार से रहते है राग लोभ मोह मत्सर से दूर रहते है उन्हें ही विकार रहित विशुद्ध ब्रम्हलोक प्राप्त होता है।

दूसरे प्रश्न मैं भार्गव ऋषि पिप्पलाद महर्षि से पूछते है कि प्रजा यानि प्राणियों के शरीर को धारण करने वाले कितने देवता है? इनमे से कौन से इसको प्रकाशित करने वाले है? और इन सबमे अत्यंत श्रेष्ठ कौन है? पिप्पलाद ऋषि के अनुसार इस सब का आधार आकाश रूपी देवता ही है। परन्तु उससे उत्पन्न होने वाले अन्य चार महाभूत – वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी भी इस शरीर को धारण करते हैं। इसके आलावा पांच कर्म इन्द्रिया – श्रोता, पश्य, गंध, स्पर्श, और वाणीय पांच ज्ञानेन्द्रिया एवं मन आदि चौदह देवता इसमें वास करते है। इनमे प्राण को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। प्राणों का शरीर में प्रवेश मन के संकल्प से होता हो। यह प्राण, अपनापन, सामान, व्यान और उदान रूप में निश्चित स्थानों पर स्थित हो कर कार्य करता है। अंतिम प्रश्न के उत्तर में सभी इन्द्रियों और सोलह कलाओ का स्थान परब्रह्म परमेश्वर का ही विराट रूप है। सभी परमपिता में समाश्रित हैं।

इस उपनिषद मे जीवात्मा कि शरीर रचना का अध्यात्मिक रूप प्रस्तुत किया है। जीवात्मा के उत्पत्ति, उसमे स्थित प्राण और इंद्रियों के देवताओ, उनकी श्रेष्ठता, महिमा और वास का वर्णन किया है।

डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर
सहायक प्राध्यापक

निबंध लेखन –

प्रतियोगिताएं–

हिन्दी पखवाडा वर्ष 2022 अंतर्गत निबंध लेखन एवं स्वरचित कविता पाठक में विजयी प्रतिभागियों के लेख

सामाजिक सामन्जस्य में सार्वजनिक स्थानों एवं जल स्त्रोतों की भूमिका

भारत देश की मूल आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण परिवेश में मनोरंजन के साधनों के लिए वहां पर लोग खेलकूद, लोक नृत्य, चौपाल व लोक उत्सवों से अपना मनोरंजन करते हैं। इसी सामाजिकता को स्थापित करने हेतु सार्वजनिक स्थलों की आवश्यकता रहती है। मंदिर, चौपाल, खेल का मैदान, तालाब, कुंआ यहां पर सभी महिला पुरूष, बच्चे आकर एकत्र होते हैं। प्रत्येक सार्वजनिक स्थलों का अपना एक महत्व है। पूजा खेलकूद, लोकनृत्य समाज में मनोरंजन के साथ ही साथ लोगों के मध्य पारस्परिक सामन्जस्य को भी बढ़ाते हैं। आयोजन में सम्मिलित सभी लोग मिलजुल कर कार्यक्रम को सफल बनाते हैं। इससे सामूहिक रूप से कार्य करने से आपसी बातचीत, मेल–मिलाप को बल मिलता है।

परन्तु अब शहरीकरण के दौर में सार्वजनिक स्थलों का अकाल सा होता जा रहा है। शहरों में एक बड़ा पार्क खोजना समस्या हो गई है। पार्क में सभी वर्गों के लोग आपस में मिलते हैं, खेलते हैं। सार्वजनिक स्थलों पर जैसे बस अड्डे, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन एयरपोर्ट पर व्यक्ति आपस में बातचीत करते हैं। जोकि विभिन्न प्रांतों, देशों से होते हैं। उन्हें एक दूसरे के परिवेश, भाषा, बोलचाल, खानपान के बारे में पता चलता है। इन सार्वजनिक स्थलों का निर्माण इस प्रकार से होना चाहिये कि वह आरामदेह व सुविधाजनक हो (गर्मियों में टिन शेड व्यवस्था व सर्दियों हेतु बंद कमरे या दीवारें सुलभ
प्रसाधन, स्वच्छ जल की व्यवस्था एवं आदर्श सार्वजनिक स्थल की पहचान है जहां व्यक्ति एक घंटे से ज्यादा समय व्यतीत करता है। एयरपोर्ट पर यह सभी व्यवस्थायें रहती है परन्तु रेलवे स्टेशनों पर अभी और कार्य करने की आवश्यकता है।

जल स्त्रोतों के नाम पर तालाब, नदी, कुंओं, समुद्र का ध्यान आता है ऐतिहासिक विदित है कि नगरों, बस्ती सभ्यता का निर्माण नदियों के किनारे हुआ है। नदियों के किनारे ही धर्म, संस्कृति विकसित हुई है। प्राचीन मंदिरों का निर्माण नदियों के किनारे हुआ है या समुद्र के किनारे चाहे वह पुरी मंदिर हो या सोमनाथ। जहां पर सभ्यता विकसित होती है वहीं पूजा धर्म के साथ निरंतर अपने को विकसित करता रहता है।

सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर सभी सभ्यताओं का उद्गम व अर्विभाव वहीं पर हुआ जहां पर जल के स्त्रोत पाये गये। यदि आप 5000 वर्ष पूर्व डूबी हुई द्वारिका को देखें तो, समुद्र के भीतर डूबी सभ्यता की झलक दिखाई देगी। ''जल ही जीवन है'' अर्थात जल स्त्रोंत ही जीवन का आधार है। मनुष्य को अपना जीवन–यापन करने के लिए, अन्न उपजाने, पशुपालन व जीवन निर्वहन हेतु जल की आवश्यकता रहती है। जल स्त्रोत मनुष्य के लिए अनिवार्य है।

आज भी जहां पर बावड़ी, कुंआ जैसे जल स्त्रोत है वहां पर महिलाएं, पुरूष मिलते हैं आपस में दुःख सुख साझा करते हैं। नदी किनारे लगने वाले मेले, मंदिरों में पूजा, आरती, एक धार्मिक व सामाजिक समरसता को दर्शाते हैं। सामाजिक संरचना को जीवंत रखने हेतु सार्वजनिक स्थलों एवं जलस्त्रोतों की महती भूमिका है।

प्रथम स्थान, आनंद किषोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

सामाजिक सामन्जस्य में सार्वजनिक स्थानों एवं जल स्त्रोतों की भूमि

सामाजिक सामान्जस्य में सार्वजनिक स्थानों एवं जल स्त्रोतों की भूमिका भारतीय संस्कृति विविधताओं से परिपूर्ण है, यहाँ सामाजिक वर्ग विविधता अभी भी एक प्रश्न चिन्ह की भाँति या कहें कि समस्या की भांति हमारी संस्कृति में देखी जा सकती है। वर्ग व्यवस्था समाज के लिए आवश्यक है किंतु जिस व्यवस्था में कुरीतियों की मात्रा बढ़ जाती है कुरीतियां समाज के आधार स्तम्भ वर्गों पर हावी हो जाती हैं, वहां हमें इन असमानताओं को मिटाने के लिये कुछ प्रयोग करने चाहिए। जैसा कि हम जानते है कि हमारी संस्कृति में सामाजिक सामन्जस्य बनाने के लिए ही कर्म के आधार पर समाज को वर्गीकृत किया गया था। इसका सीधा संबंध हमारे रहन–सहन, वेश–भूषा एवं खान–पान आदि से है।

वास्तुकला ने सदैव ही सामाजिक असमानताओं को दूर कर सामन्जस्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जल जीवन का आधार है, जल स्त्रोतों का समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान है। नदियों के पास मनुष्य जाति का, स्थापत्य कला का वर्णन मिलता है। नदियों के घाट, तट आदि पर सामाजिक आयोजन मनुष्य सभ्यता में वैदिक काल से देखी जा रही है। जिस प्रकार मनुष्य सभ्यता विकसित हुई, उसी के साथ जल स्त्रोतों का उपयोग सामाजिक रूप से होना विकसित होता गया।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है इसलिए शहरीकरण होने के बाद भी सर्वसुविधायुक्त स्थानों से बाहर निकलकर सार्वजनिक स्थानों एवं जलस्त्रोतों के आस–पास एकत्रित होना, सामाजिक होना उसका सहज स्वभाव है।
घरों में काम कर पहले सभी स्त्रियां पनघट, बावड़ियों पर एकत्र होकर, गाँव की चौपाल या नदी के किनारों पर एकत्र होकर सभी अपने सामाजिक होने का परिचय देते है।

कुरीतियों के चलते जहाँ जातिवाद की सीमा बनाई जाती थी वहीं अब विकसित सभ्यता में ये धुँधली होती जा रही है। अभी के समय की बात करें तो सार्वजनिक स्थानों एवं जल स्त्रोतों का उपयोग सभी वर्ग के लोग एक साथ करते है। ये वो स्थान है जहाँ कोई किसी व्यक्ति विशेष से उसका जाति प्रमाण पत्र माँगे बिना उपयोग की अनुमति प्रदान करता है। इसका सीधा संबंध समाज की शिक्षा व्यवस्था से भी है। अभी भी पिछड़े इलाकों के कई उदाहरण है जो सार्वजनिक स्थानों एवं जल स्त्रोतों पर पाबंदी लगाए हुए है जिनका उपयोग किसी वर्ग विशेष द्वारा ही किया जाता है।

जल स्त्रोतों से ही मानव सभ्यता सदैव से जुड़ी रही है इसलिए जल स्त्रोतों पर समाज के सभी वर्गों का समान अधिकार होता है। किन्तु अधिकार राजनीति निर्धारित करती है, वर्तमान समय में सभी का समान अधिकार होने से ये सार्वजनिक स्थान एवं जल स्त्रोत एकाधिकारी की मानसिकता को पीछे छोड़ते हुए समाज में सामान्जस्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। बाबड़ी, कुए, घाट इन सबकी महत्ता अब जल मात्र लेने से ना होकर विचार अदान–प्रदान की भी हो गई है। उद्यान, सिनेमा, कला केन्द्र इत्यादि की भूमिका समाज को जोड़ने की हो गई है।

द्वितीय स्थान, संजीव अनुपमा
छात्र (भूपरिदृष्य)

सामाजिक सामन्जस्य में सार्वजनिक स्थानों एवं जल स्त्रोतों की भूमिका

वास्तुकला राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है साथ ही साथ हमारे भारत देश की विभिन्न संस्कृतियों का दर्पण भी है। बाल्यावस्था से हम हमारे देश की अलग–अलग जगहों को वहाँ की इमारतों, किलों, शाही राजदरबारों, बड़े–बड़े स्काइस्क्रेपर्स तथा हर तरह की वास्तुकला के कारण स्मरण में रखते हैं। जैसे जब दिल्ली गये थे तो हमने कुतब मीनार देखी, आगरा गये तो ताजमहल देखा, हैदराबाद गये तो चार मीनार, इत्यादि।

भारत देश की संस्कृति बहुत व्यापक है तथा विभिन्न जगहों पर यात्रा करके हम देश की न सिर्फ संस्कृति बल्कि उसका इतिहास, भूगोल और वर्तमान के प्रासंगिक वास्तुकला के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। एक वास्तुविद का ज्ञान तब तक अधूरा है जब तक वह हर संभव यात्रा करके अलग–अलग संस्कृतियों को वास्तुकला के माध्यम से विश्लेषण, अनवेषण तथा आत्मसात न कर लें।

वास्तुकला तथा संस्कृति एक ही प्रसंग के दो पहलू जैसे हैं। हर सभ्यता की पृथक जीवनशैली, पृथक खानपान, वास्तुकला से प्रभावित है, जैसे कि मुगलकाल में जिस प्रकार से खान–पान की सभ्यता थी, उसी प्रकार से उनके बावर्ची खाने डिजाइन किये गये थे। जिन मुगलकाल के महलों में अंदर बगीचे बनाये गये, उन महलों में इतने कमाल की वास्तुकला का प्रयोग किया गया है कि खिड़की/रोशनदान दीवार (कमरे की) के एक तरफ से दिखाई देती है तथा दूसरी तरफ से सिर्फ सपाट दीवार दिखती है।

पुरातत्व विभाग के लेखों को अगर पढ़ा जाये तो यह जानने को मिलता है कि हम आज जितना बिजली तथा उससे चलने वाले अप्लाइंसेस पर निर्भर हैं, पुराने जमाने में इसकी पूर्ति तत्कालीन वास्तुविदों के कमाल के डिजाईनों से की जाती थी।

मौसम का इतना अच्छा प्रबंध था कि गर्मी में बिना पंखे, कूलर, एसी इत्यादि के भी अद्भुत डिजाईन वाले कमरों में भी शीतल बयार बहती थी।

इसी तरह वास्तुकला ने सभी संस्कृतियों को प्रभावित किया है। मध्यप्रदेश के तामिया रजीन में पातालकोट की यात्रा का वर्णन वास्तुकला तथा इस विषय में बहुत महत्वपूर्ण है। पातालकोट कई फीट, गहरे कुँआ नुमा जगह का नाम है जहाँ मध्यप्रदेश की एक अति पिछड़ी जाति का वास है। यहाँ पर सूर्य की रोशनी/ किरणें नहीं पहुँचती है तथा यहाँ की जीवनशैली में वास्तुकला का बड़ा योगदान है।

अंत में यही कहना चाहूंगी की वास्तुकला हमारे यात्राओं में तथा संस्कृति का अभिन्न तथा अंतहीन भाग है। जिसका विस्तृत वर्णन के लिए आपको भी यात्रायें करनी चाहिए।

विचित्र वास्तुविद, विचित्र वास्तुकला, गये संत, गये संसारि ।

तृतीय स्थान, आलिया अली
व्यैक्तिक सहायक

स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता

कर्मचारी श्रेणी

26/11 मुम्बई अटैक

खोजती हूँ भगवान तुमको, तुम कहाँ हो?
तुम कहाँ हो?क्या मिट गया अस्तित्व तुम्हारा,
तुम कहाँ हो? तुम कहाँ हो?।।
कहीं मिल भी जाओ तो पूंछ लूँ,
सवाल मन में कुछ हैं घूमते? ।।
कोई ज़िहाद पाना चाहता है, तो कोई अमन की शांति,
बेक़सूर मासूम बेचारे, चुकाते कीमत अपनी जान की।।
परिवार रोते–बिलखते उनके, सोंचते हैं कसूर क्या है?
क्या बिगाड़ा हमने किसी का यहाँ?
जो हमको मिली ये सज़ा है।।
बँटवारे तो सरहदों के हुए, तो हमको तू क्यों बांटता है?
क्या ज़िन्दगी इतनी सस्ती हो गयी?
कि कोई भी उसको छीनता है।।
चाहे आतंकवाद हो, या फिर काश्मीर–हिन्दूस्तान हो।।
तू क्यों चुप चाप बैठा है?, क्या तेरे ये लोग नहीं?
खुद तो मदारी बन बैठा है, पर तमाशा तो ये तेरा ही है।।
अब तो आँखे खोल ले अपनी, देख उन मासूम बेचारों को,
खून से लथ पथ लाशें हैं,
और बदले की आग में तकदीर के मारों को,
किसी ने गंवाया बचपन अपना, तो किसी ने जवानी की कुर्बान,
सीना पीट रहीं माताएँ–बहने,
जब दांव पर लग गया उनका सम्मान।।
कोई लड़ता है मातृभूमि के लिए, तो काई पाने को ज़िहाद,
इन्सान तो इतने सस्ते हो गए,
बस महँगे हो गए उनके जज़्बात।।
इन्सान तो इतने सस्ते हो गए,
बस महँगे हो गए उनके जज़्बात।।।।

प्रथम स्थान
अनुपमा भारती
सहायक प्राध्यापक

कौन हूँ मैं

कौन हूँ मैं, हूँ कहाँ से आया
क्या मेंने खोया, क्या है पाया।
मंजिल हूँ मैं, कि हूँ मैं डगर
बना हूँ अभी कि,गया हूँ बिखर ।
सब साथ है मेरे,कि हूँ अकेला
साधारण हूँ,कि हूँ मैं अलबेला ।
शून्य हूँ, कि हूँ मैं अनन्त
आदि हूँ, कि हूँ मैं अंत ।
ये कौन जिंदा है, मेरे अंदर
बूँद हूँ, कि हूँ मैं समंदर ।
तृप्त हूँ, कि हूँ मैं तलाश
दूर हूँ, कि हूँ मैं पास ।
जवाब हूँ, कि हूँ मैं सवाल
हकीकत हूँ, कि हूँ मैं ख्याल ।
सृष्टि हूँ, कि हूँ मैं मिट्टी
बंजर हूँ, कि हूँ मैं वृष्टि ।
कौन हूँ मैं हुँ, कहाँ से आया.....

द्वितीय स्थान
कुष श्रीवास्तव
लेखापाल

सच और मृगतृष्णा

मैं आंखें मूंदे चल रहा हूं,
इस जग में, गिरने के डर से भी डर रहा हूं,
मैं आंखें मूंदे चल रहा हूं।
सच और मृगतृष्णा के भेद से अनजान,
यूं ही धधक रहे हैं असंख्य श्मशान,
कोई है खुदा के पीछे, किसी के आगे हैं राम,
सभी लगे हैं सहेजने में अपने गिरेबान,
अरे, किसने हासिल कर पाया है आज तक
कौन सा मुकाम?
सभी लगे हैं लगाने में वफादारी व ईमानदारी
के दाम
कर रहे जीवन मात्र का अपमान
सच और मृगतृष्णा के भेद से अनजान।

मैं आंखें मूंदे चल रहा हूं,
इस जग में, बिखरने के डर से डर रहा हूं,
सच को परखने के डर से डर रहा हूं,
खुद को ही समझने के डर से डर रहा हूं,
पर चल रहा हूं, यूं ही चल रहा हूं।

प्रथम स्थान,
पियूश बिलगैया
छात्र

धर्म

एह धर्म .... तू इतना बेगैरत हो चुका है !
हद– की हद– से गुज़र चुका है ।।
सोच न पहुंचे जहां तक,
वहां तक तेरा ज़हर पहुंच चुका है ।।
यह तेरा मंदिर ...
मस्जिद से बैर निभाने लगा है।
राम हमारा है अल्लाह तुम्हारा है यह सुनाने लगा है।।
वह हिंदू है यह मुस्लिम है तो बताओ ठप्पा कहां है?

अज्ञान से परेशान क्यूं कहते हो?
इतनी दफा नमाज़ क्यों पढ़ते हो?
हिजाब पहन कर स्कूल मत आना।
हल्दीराम का सामान हराम है, उसे मत खाना।
उर्दु में लिखा है ....
कुछ तो मज़हबी इसमें छिपा है।।
एह मज़हब ... तू भोजन में भी आ गया!
शर्म–हया .... सब बेच खा गया।।

ऐ–जोमैटो वाले .... चल बता क्या है तेरा नाम?
शामू है तो ठीक है .... अहमद है तो काम–तमाम।।
एह मज़हब, तू नापाक है,
तेरा हर मनसूबा खतरनाक है।
तूने कितना खून बहाया है!
खींच लाल लकीर, हिंदु पाकिस्तान बनाया है।।
कब तक यूहीं लड़वायेगा?
क्या एक और बटवारा करवायेगा?

न मुस्लिम न हिंदु कुछ नहीं देखता वो,
सिर्फ कर्म और इंसानियत का धर्म देखता वो।
मजहब पर लड़ने वालों, तुम्हें कब समझ में आयेगा।?
जब सब उजड़ जाएगा, कुछ भी न बच पाएगा!!
शायद तब समझ आएगा,
राख के ढेर से जब कुछ बन नहीं पाएगा।।

तृतीय स्थान, मोहित सोनी
सहायक प्राध्यापक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष
प्रो. चंद्र चारू त्रिपाठी

सदस्य

श्री शाजू वर्गीज़, कुलसचिव (प्रभारी)
डॉ. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक
डॉ क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव सिंह, सहायक प्राध्यापक
श्री सन्मार्ग मित्रा, सहायक प्राध्यापक
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमति दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक

सम्पादक मण्डल

डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
डॉ. मुकेश पाठक, उप पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमति दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक
श्री शुभम चौधरी, छात्र परिषद द्वारा नामित, प्रतिनिधि

पत्रिका के मुख एवं अंतिम पृष्ठ का अभिकल्पन
सुश्री उर्जसी बोस, छात्रा, वास्तुकला

पत्रिका के आंतरिक पृष्ठों का अभिकल्पन

एलिशा खाटीवाल छात्रा, योजना
सुनिधि तिवारी छात्रा, योजना

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत के झीलों के शहर में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में मालवा यास्तुकला का अर्थ समाहित है, जो कि मालया सल्तनत की राजधानी मांदू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने महादेव के प्रतीक एक शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु इसमें अर्पित करते हैं। जलवाहिका में प्रवाहित जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है। जो कि वास्तुकला का अभिन्न अंग एवं योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह में शंखाकार रूप में दर्शित 'S' अग्नि 'P' वायु तरंग एवं 'A' पानी की बूंद प्रदर्शित करती है प्रतीक चिन्ह के नीचे संस्कृत में लिखा श्लोक 'रथपतिः स्थापनाएं स्यात् सर्वशास्त्रः समरांगना सूत्रधार से उद्दत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिए. प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सर्व विषयों में पारंगत कर भविष्य में एक नये आयाम के लिए तैयार करना है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, मंत्रालय, भारत सरकार) - नीलबड रोड, भौरी, भोपाल (म.प्र.) 462030 (भारत)

Website: www.spabhopal.ac.in